भूमिका

मध्यप्रदेश कृषि-प्रधान राज्य है। दलहनों एवं तिलहनों के उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। इन दोनों के कुल उत्पादन में राज्य का भाग एक-चौथाई के आसपास है। देश में खाद्यान्न के कुल उत्पादन का भी पांचवां भाग मध्यप्रदेश में उगता है। चने और सोयबीन के उत्पादन में तो राज्य बहुत आगे है, चने के कुल उत्पादन का लगभग ४० प्रतिशत और सोयबीन के कुल उत्पादन का लगभग ६० प्रतिशत मध्यप्रदेश से आता है। मसूर के कुल उत्पादन में भी राज्य का २० प्रतिशत का भाग है।

२०११ की जनगणना के अनुसार राज्य के कार्यशील लोगों में से ६९.८ प्रतिशत कृषि में हैं। केवल बिहार और छत्तीसगढ़ में यह अनुपात इससे अधिक है। भारत का माध्य ५४.६ प्रतिशत है। अगस्त २०१३ तक संकलित आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के कुल घरेलू उत्पाद का २२ प्रतिशत से अधिक खेती से आता है। कृषि में लगे व्यक्तियों के अनुपात की तुलना में यह अल्प दिखता है। पर किसी और राज्य में कृषि का भाग मध्यप्रदेश के तुल्य नहीं है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का भाग तो अब ११.६ प्रतिशत रह गया है। ये आंकड़े २००४-०५ के भावों के अनुसार हैं। २००४-०५ में राष्ट्रीय लेखा आंकड़ों की एक नयी शृंखला प्रारंभ की गयी थी। तब से अधिकतर राज्यों में कृषि का भाग घटता गया है, मध्यप्रदेश में यह प्रायः स्थिर रहा है। क्योंकि कृषि में लगी जनसंख्या का अनुपात कुछ घटा है, अतः प्रदेश में कृषकों की सापेक्ष स्थिति कुछ सुधरी ही है। ऐसा देश के किसी और राज्य में हुआ हो, ऐसा नहीं दिखता।

मध्यप्रदेश में पिछले तीन-चार दशकों से कृषि में सहज गति से परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया चल रही है। इस अवधि में कृषि का स्वरूप बदल गया है। सब जिलों में सिंचाई का विकास हुआ है, द्विफसली क्षेत्र और फसलों के अंतर्गत सकल क्षेत्र बढ़ा है। फसलों का पारस्परिक अनुपात बदल गया है। तिलहनों का बहुत विस्तार हुआ है। दलहन का क्षेत्र भी कुछ बढ़ा है। अनाजों का क्षेत्र घटा है। मोटे अनाजों का क्षेत्र बहुत संकुचित हुआ है और गेहूँ का बहुत विस्तार हुआ है। दलहनों में चने का क्षेत्र बढ़ा है, शीत ऋतु की अन्य प्रमुख दलहनें मसूर और मटर का भी विस्तार हुआ है, और ग्रीष्म की दलहनें अपेक्षाकृत गौण हुई हैं। तिलहनों में सोयबीन का वर्चस्व हो गया है। शीत की प्रमुख तिलहन सरसों-राई का क्षेत्र भी बढ़ा है, पर ग्रीष्म ऋतु की अन्य दो प्रमुख तिलहन मूंगफली एवं तिल अपेक्षाकृत गौण हुई हैं।

परिवर्तन एवं विकास के ये सब प्रवृत्तियाँ पिछले ९-१० वर्षों में अत्यंत तीव्र हुई हैं। इस काल में शुद्ध सिंचित क्षेत्र, द्विफसली क्षेत्र और सकल क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। गेहूँ एवं सोयबीन का उत्पादन दोगुना हो गया है। पिछले तीन-चार वर्ष में विकास की गति और भी तीव्र हुई है।

इस मानचित्रावलि के अंतिम से पहले के खंड में दी गयी दीर्घकालीन प्रवृत्तिरेखाएँ पिछले दसेक वर्षों में प्रदेश की कृषि में हुए तीव्र विकास का विशद चित्र प्रस्तुत करती हैं। पर उद्देश्य इन १०-१२ वर्षों का लेखा-जोखा करना नहीं अपितु प्रदेश के विभिन्न जिलों की कृषि के स्वरूप और आधुनिक काल में हुए परिवर्तनों का विस्तृत चित्रण करना है। सत्तर के दशक और इक्कीसवीं शती के पहले दशक में कृषि के विभिन्न आयामों की जिलानुसार स्थिति का चित्रांकन करते हुए सैंकड़ों मानचित्र यहाँ दिये गये हैं।

मानचित्रावलि के प्राथमिक दो खंडों में सामान्य भूगोल एवं जनसांख्यिकी का चित्रण किया गया है। भूगोल संबंधी मानचित्रों में नदियों, जलाशयों एवं नहरों के मानचित्र विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रदेश के प्रत्येक भाग में प्रवाहित हो रही नदियाँ ऐसा आभास देती हैं जैसे किसी मानव शरीर में जीवनदायी शिराओं का तंत्र फैला हो। गंगा, यमुना, नर्मदा एवं गोदावरी समेत देश की छह प्रमुख नदियों के नदीक्षेत्र मध्यप्रदेश में पड़ते हैं। इन नदियों से अनेक नहरें निकाली गयी हैं, जिनसे अनेक जिलों में अत्यंत सघन कृषि होने लगी है। मृदा-संबंधी मानचित्रों में प्रदेश के कुल प्रायः ३ करोड़ हेक्टेयर के भौगोलिक क्षेत्र में से १ करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र कृषिधारण क्षमता की दृष्टि से उच्च वर्ग में आता है। गंगा-यमुना के मैदान के बाहर किसी बड़े क्षेत्र में उच्च कृषि क्षमता वाली भूमि का इतना ऊँचा अनुपात होना असाधारण है।

जनसंख्या-संबंधी मानचित्र १९०१ से २०११ के मध्य की दशवार्षिक जनगणनाओं के आंकड़ों के आधार पर बनाये गये हैं। इन मानचित्रों को आगे दिये गये कृषिक्षेत्र, वनक्षेत्र एवं विभिन्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्र के मानचित्रों के संदर्भ में देखने पर कृषि के समाजशास्त्र से जुड़े अनेक आयामों को समझा जा सकता है।

भूमि, सिंचाई एवं पशु तो कृषि का आधार होते हैं। खंड ३ से ५ में क्रमशः इन पक्षों का चित्रण हुआ है। मध्यप्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का २८ प्रतिशत वनों के अंतर्गत है, तथापि ४८ प्रतिशत क्षेत्र पर खेती की जा रही है। जहाँ वन बहुत नहीं है ऐसे अनेक जिलों में तो ७० से ८० प्रतिशत क्षेत्र पर खेती होती है। पर जिन जिलों में ५५ प्रतिशत से अधिक क्षेत्र वनों के अंतर्गत हैं वहाँ भी शुद्ध बोये गये क्षेत्र का अनुपात २५ प्रतिशत से कुछ अधिक ही है। लगता है कि जहाँ भी हल चलाने की थोड़ी-बहुत संभावना बनती है वहाँ प्रदेश के अध्यवसायी कृषक खेती कर ही लेते हैं। इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय आयाम द्विफसली क्षेत्र के विस्तार का है। १९७६-८१ और २००५-१० के मध्य द्विफसली क्षेत्र का माध्य १७ से बढ़कर ५६ लाख हेक्टेयर हुआ है, और इसमें से प्रायः आधी वृद्धि पिछले आठ-दस वर्षों में हुई है।

सिंचाई में भी असाधारण वृद्धि हुई है। शुद्ध सिंचित क्षेत्र का माध्य १५.५ से बढ़ कर ६४ लाख हेक्टेयर के पास पहुँचा है, इस वृद्धि का एक बड़ा भाग भी पिछले कुछ वर्षों में हुआ है। सिंचाई के सब स्रोत बढ़े हैं। सबसे अधिक वृद्धि नलकूपों में हुई है, यह बिजली की उपलब्धि से ही संभव हुआ है। जल संरक्षण पर आधारित 'अन्य स्रोतों' से सिंचित क्षेत्र भी बहुत बढ़ा है।

१९८२ और २००७ की पंचवर्षीय राष्ट्रीय पशुगणनाओं के मध्य कुल पशुधन ३.२ करोड़ से बढ़कर ४.१ करोड़ हुआ है। पर प्रति १०० व्यक्तियों पर पशुओं की संख्या तो ८१ से घटकर ६० हुई है। गाय एवं बछड़े-बछड़ियों की संख्या में कुछ वृद्धि हुई है। भैसों की संख्या में कहीं अधिक वृद्धि हुई है। बैलों की कुल संख्या कुछ घटी है। फिर भी अनेक जिलों में और विशेषतः जनजाति-बहुल जिलों में बैलों की संख्या बढ़ी ही है। बकरियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, पर भेड़ें प्रायः आधी रह गयी हैं। गायों की अपेक्षा भैंसों और भेड़ों की अपेक्षा बकरियों पर आग्रह पशुपालन में व्यावसायिक प्रवृत्तियों के उभरने का परिणाम है। इस सब के होते हुए भी गायों, बैलों एवं बछड़े-बछड़ियों की कुल संख्या में मध्यप्रदेश अन्य सब राज्यों से काफी आगे है।

कृषि के मूलभूत घटकों भूमि, जन, जल और पशु का चित्रण करने के पश्चात् आगे खंड ६ से १० में विभिन्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्र के मानचित्र दिये गये हैं। ये मानचित्र १९७६-८१ और २००४-०९ के पंचवर्षीय माध्य के आधार पर बनाये गये हैं। इन तीन दशकों में फसलों का सकल क्षेत्र बढ़ा है। ग्रीष्म की फसल में २१ लाख और शीत की फसल में २३ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। पर अनाजों के क्षेत्र में १० लाख हेक्टेयर का ह्रास हुआ है। दलहनों का क्षेत्र ८ लाख हेक्टेयर बढ़ा है। तिलहन के क्षेत्र में ४७ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। (दे., खंड ६)।

अनाजों में, गेहूँ के क्षेत्र में ८ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है, धान में भी १.५ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है, पर मोटे अनाजों में प्रायः १९ लाख हेक्टेयर का ह्रास हुआ है। मक्का २.५ लाख हेक्टेयर बढ़ा है, बाजरा प्रायः स्थिर रहा है, पर अन्य सब मोटे अनाजों का क्षेत्र संकुचित हुआ है। मात्र ज्वार के क्षेत्र में ही १४.५ लाख हेक्टेयर का ह्रास हुआ है। इसके अतिरिक्त कोदों-कुटकी में ४.५ लाख हेक्टेयर और सांवा, जौ एवं अन्य मोटे अनाजों में २.५ लाख हेक्टेयर का ह्रास हुआ है। (दे., खंड ७)।

दलहनों में, चने के क्षेत्र में ९ लाख, मसूर में २.५ और मटर में १ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। ग्रीष्म की दलहनों में ४.५ लाख हेक्टेयर का ह्रास हुआ है। तुअर, मूंग-मोठ, लाख, कुल्थी आदि का क्षेत्र बहुत घटा है। पर तुअर का क्षेत्र अब भी पर्याप्त है, तुअर के राष्ट्रीय उत्पादन में राज्य का १३ प्रतिशत का भाग है। उड़द का क्षेत्र प्रायः स्थिर रहा है। (दे., खंड ८)।

तिलहनों में हुई वृद्धि मुख्यतः सोयबीन में है। १९७१-८६ में इसका माध्य क्षेत्र २ लाख हेक्टेयर भी नहीं था, २००४-०९ में ४९ लाख हेक्टेयर है। सरसों-राई का क्षेत्र १.७ से बढ़ कर ७.५ लाख हेक्टेयर हुआ है। अलसी का पहले बहुत प्रचलन था, इसका क्षेत्र ४.१ से घट कर १.२ लाख हेक्टेयर रह गया है। मूंगफली भी घटी है, तिल प्रायः स्थिर रहा है। (दे., खंड ९)।

अन्य फसलों का क्षेत्र १९ लाख से कुछ घट कर १८ लाख हेक्टेयर हुआ है (दे., खंड १०)। चरी में ३ लाख हेक्टेयर का ह्रास हुआ है। रुई का क्षेत्र प्रायः स्थिर रहा है, पर अनेक जिलों में रुई का प्रचलन अब नहीं रहा। शाक-भाजियों एवं मसालों का क्षेत्र ३ लाख हेक्टेयर बढ़ा है। गन्ने के कुल क्षेत्र में बहुत अंतर नहीं पड़ा, पर कई नये जिलों में इसका प्रचलन हुआ है। प्रदेश में फल बहुत नहीं होते। पर बुरहानपुर में केले की खेती बढ़ी है।

अगले खंड (खंड ११) में विभिन्न फसलों के जिलानुसार प्रति व्यक्ति उत्पादन के मानचित्र दिये गये हैं। १९७६-८१ एवं २००४-०९ के मध्य खाद्यान्न के प्रति व्यक्ति उत्पादन में बहुत अंतर नहीं आया, २००४-०९ का माध्य २०६ किलोग्राम है। २००८-०९ के बाद के तीन वर्षों में प्रति व्यक्ति उत्पादन सहसा बढ़कर २५६ किलोग्राम तक पहुँचा है। २००४-०९ में खाद्यान्न के २०६ किलोग्राम के माध्य उत्पादन में १५८ किलोग्राम अनाज और ४८ किलोग्राम दलहन का है। १९७६-८१ एवं २००४-०९ के मध्य गेहूँ का प्रति व्यक्ति उत्पादन ७६ से बढ़कर १०५ किलोग्राम हुआ है, और मोटे अनाजों का उत्पादन ६५ से घटकर ३२ किलोग्राम रह गया है। दलहनों में चने का प्रति व्यक्ति उत्पादन २६ से बढ़कर ३६ किलोग्राम हुआ है, मसूर में भी किंचित् वृद्धि हुई है, पर तुअर, मूंग-मोठ आदि का प्रति व्यक्ति उत्पादन घटा है। तिलहनों का प्रति व्यक्ति उत्पादन १३ से बढ़कर ८९ किलोग्राम तक पहुँचा है। इसमें ७३ किलोग्राम भाग सोयबीन का है। सरसों-राई का प्रति व्यक्ति माध्य उत्पादन भी २ से बढ़कर ११ किलोग्राम तक पहुँचा है। तिल में भी कुछ वृद्धि हुई है। मूंगफली एवं अन्य तिलहनों का प्रति व्यक्ति उत्पादन घटा है।

अब तक के सब मानचित्र फसलों के क्षेत्र एवं उत्पादन का जिलानुसार चित्रण करते हैं। राज्यस्तरीय जिन प्रवृत्तियों का संक्षिप्त वर्णन हमने ऊपर किया है, वे सब जिलों के लिये समान नहीं हैं। विभिन्न क्षेत्रों एवं जिलों की खेती का अपना-अपना विशिष्ट स्वरूप है, और आधुनिक काल में हुए परिवर्तनों का प्रभाव विभिन्न जिलों में भिन्न रहा है। ये मानचित्र विभिन्न जिलों की कृषि-संबंधी इस विशिष्टता को ही प्रदर्शित करते हैं।

खंड १२ में राज्य में १९६४-६५ से २०११-१२ तक हुए कृषि-विकास का चित्रण करती हुई दीर्घकालीन प्रवृत्तिरेखाएँ दी गयी हैं। राज्य में १९७० के दशक के प्रारंभ से कृषि का सहज धीमी गति से विकास होने लगा था। १९९० के दशक के प्रारंभ से विकास की गति तीव्र होने लगी और बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों तक यह प्रक्रिया सतत चलती रही। पिछली शताब्दी के अंत और नयी शताब्दी के प्रारंभ के तीन-चार वर्षों में प्रदेश की कृषि में सहसा ह्रास हुआ, कृषि के समस्त आयामों में गिरावट आयी। २००३-०४ के आसपास कृषि में फिर सुधार होने लगा और अगले ८-९ वर्षों में कृषि में असाधारण वृद्धि हुई है। इस काल में हुए विकास की तुलना पहले के किसी कालखंड से नहीं की जा सकती। पिछले तीन-चार वर्षों में तो विकास की गति अत्यंत तीव्र हुई है, यहाँ दी गयी प्रवृत्तिरेखाओं में यह काल सबसे पृथक् दिखायी दे रहा है। इस खंड के अंतिम भाग में प्रदेश के सब ५० जिलों के लिये कृषि के तीन प्रमुख आयामों, शुद्ध बोया गया, शुद्ध सिंचित और फसलों के अंतर्गत सकल क्षेत्र की दीर्घकालीन प्रवृत्तिरेखाएँ दे दी गयी हैं। इन प्रवृत्तिरेखाओं से स्पष्ट है की इन पांच दशकों में राज्य की कृषि में जो विकास हुआ है, उसमें प्रायः सब जिलों का भाग रहा है। कहीं विकास की गति कुछ पहले बढ़ने लगी, कहीं कुछ बाद में। पर सब जिलों की विकास-यात्रा प्रायः समानांतर चली है। पिछले दशक में हुई तीव्र प्रगति से तो कदाचित् ही कोई जिला अछूता रहा हो।

अंतिम खंड में इस मानचित्रावलि में प्रयुक्त समस्त आंकड़ों का विस्तृत सांख्यिकी तालिकाओं में संकलन कर दिया गया है।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्राथमिक दशकों में एक अंग्रेज अधिकारी एलेक्जेंडर वॉकर ने देश के विभिन्न भागों की कृषि का पर्यवेक्षण किया था। उसने पाया था कि सब क्षेत्रों के लोग कृषि में विशेष रुचि रखते हैं। वे अपने खेतों को प्रयासपूर्वक उद्यानों-सा सुंदर बनाये रखते हैं और कृषि की ही बातें करते रहते हैं। मलबार के संदर्भ में वे लिखते हैं कि, 'मलबार में कृषि का ज्ञान उतना ही प्राचीन है जितना उसका इतिहास। यहाँ के वासियों का यह प्रिय व्यवसाय है। ... लेखकों का यह प्रिय विषय है। यहाँ के लोग कृषिसंबंधी बातें करते अघाते नहीं हैं। सब श्रेणियों के लोग कृषि के जानकार होने में गौरव अनुभव करते हैं। ...'

कृषिप्रधान देशों में कृषि का ऐसा ही महत्त्व होता है। वहाँ किसी के सुसंस्कृत-सुशिक्षित होने का प्रमाण उसके कृषि संबंधी ज्ञान की व्यापकता और गहनता में ही देखा जाता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में तो अब भी लोग अपने आसपास के और सुदूर क्षेत्रों के मिट्टी-पानी की, पशुओं की, विभिन्न स्थानों पर विभिन्न ऋतुओं में उगायी जाने वाली फसलों की, उगाने की विभिन्न विधियों की, विभिन्न बीजों की, खादों की और सिंचाई के साधनों की जानकारी रखने में गर्व अनुभव करते हैं। जो इन विषयों के बारे में जानता है उसी की ग्राम-समाज में प्रतिष्ठा होती है।

अपनी आधुनिक शिक्षा में हमने कृषि की बातों पर ध्यान देना प्रायः बंद कर दिया है। इस मानचित्रावलि में हमने कृषि को गंभीरता से लेने और प्रदेश के विभिन्न जिलों के लोगों और वहाँ के मिट्टी-पानी, नदियों-नालों, पशुओं, फसलों आदि का विस्तार से चित्रण करने का प्रयास किया है। इस से प्रदेश के लोगों में, विशेषतः पढ़े-लिखे लोगों में, कृषि और कृषि की बातों के प्रति रुचि जागृत हो पाये तो हम इस प्रयास को सफल मानेंगे।

इस मानचित्रावलि को बनाने का अवसर देने के लिये मैं मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् का आभारी हूँ। इस कार्य को संपन्न करने में मेरे युवा सहयोगियों अश्वनी चौहान और नितिन गुप्ता की विशेष भूमिका रही है।

आञ्जनेय, जीविषा, अर्चन एवं कुसुम के स्नेह, रुचि एवं प्रोत्साहन के लिये आभार तो व्यक्त नहीं किया जा सकता।

नयी दिल्ली,
विजयदशमी कलि ५११६
अक्तूबर १३, २०१३

जितेंद्र बजाज